सत्य साहित्य

वर्ष 7 / अंक 3
अप्रैल 2024
Year 7/ No. 3
April
2024

सत्य साहित्य, श्री रामशरणम् इन्टरनेशनल सेन्टर, नई दिल्ली की एक त्रैमासिक पत्रिका

सर्व शक्तिमते परमात्मने श्रीरामाय नमः

(परम पूजनीय प्रेम जी महाराज द्वारा हस्तलिखित)

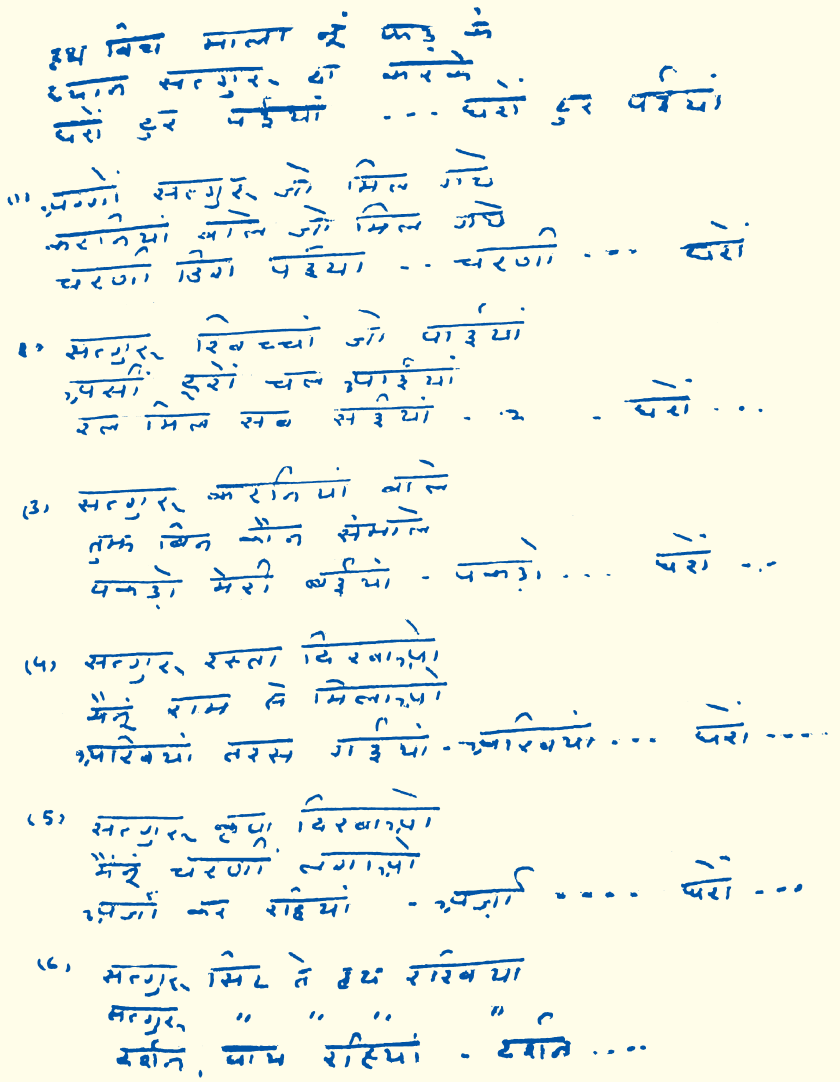

(परम पूजनीय महाराज जी की डायरी से)

इस अंक में पढ़िए

- भजन
- Alochna
- सब तेरे अर्पण है
- अनुताप अश्रु
- श्रीरामशरणम् : एक ऐतिहासिक विवरण
- विभिन्न केन्द्रों से
- आप बीती
- बच्चों के लिए
- कैलेन्डर

सत्य साहित्य

मूल्य (Price) ₹5

बधाई

Dear Maharaj ji,

Wishing you a very

HAPPY BIRTHDAY!

May your glory spread all over!

We are eternally grateful for your endless love, blessings and guidance.

Love you always,

Your dear children.

Cards sent by different centers

Alochna (Confession)

सत्यानन्द

There was a woman who lived in Mithila. She was a very wise and learned person. She was very renowned in that city for her worship and self-discipline, charity and benevolence, meditation and knowledge. She was a Sati (devout and faithful wife) of high character. One day a married lady came and confessed her sins before that Sati and started crying. The Sati said to her- 'Devi! With tears streaming down your cheeks you have cried for mercy at the gates of the Most Merciful God. That Almighty God will surely free you of your sins. Have faith in Him. Know this for certain that the Supreme Being himself redeems the devotee who repents over his sins.

Devi! Only those persons critically introspect and confess their misdeeds shedding tears of repentance, who are noble souls, who want to save themselves from downfall and who wish to remove the sharp thorn of misdeeds from their subconscious mind. Those who believe that Shree Ram is the omnipresent witness, their very bodies tremble on doing a harsh deed. Those who consider sinful deeds to be bad, those who despise bad deeds, if ever they commit an offence then tears of repentance start flowing along with their confession. O innocent one! Confession of one's mistakes and then repenting over it is the correct way of easing one's heart's burden. This is the best way of overcoming bad tendencies. Those who repent over their sins give up doing misdeeds.'

In the state of Gujarat there is a famous town by the name of Siddhpur Patan. One Audichya Brahmin (Hindu Brahmin sub-caste mainly from the Indian state of Gujarat) used to live there. He was renowned in that entire province for his knowledge, learning, character, rational thinking, selfless service, worship and meditation. One day people brought a woman to him and said- 'Pandit ji! This woman is a vile sinner and fallen wretch. She has broken her marital vow of chastity. We want to ostracize her from the community and the town. Now only your judgement on the matter remains.' Closing his eyes the Brahmin thought for a few moments. Thereafter opening his eyes he said- 'My dears! Man is an imperfect being. He is prone to sin and likely to fall at every step. Who knows who amongst us has how many vices and weaknesses. I for one do not see myself worthy of passing a sentence of banishment against her. Of course, if there is any such person amongst you who has never even committed a mental sin then he may pass such a sentence.' On hearing this everyone became silent. No one dared say a word. Then the Brahmin said- 'If ever someone commits any offence then, first, he should confess his sin before his spiritual teachers. Second, he should sincerely repent over his misdeed. Third, he should take a vow to never do it again. Fourth, by doing proper penance he should completely cleanse himself of the sin. Confession of one's sins is good just like dusting and sweeping the house. Just like by bathing daily the body is cleansed, so also by daily confession one's mind remains pure. The chores and works done through the course of the day are like the monetary dealings of a businessman and habitual introspection and confession is like

calculating the day's profit or loss. This makes one aware of all one's shortcomings. Confessing one's misdeeds before good persons is like telling a good doctor about one's mental ills and getting them treated. Not confessing one's misdeeds but keeping them hidden inside is bad just like letting dirt and filth accumulate inside one's house. It is not at all beneficial for a sick person to hide his illness, not get his boils and abscesses examined by anyone and not describe his aggravated symptoms of gas, bile and phlegm to any physician. A sick person's welfare lies in getting his illness treated. So also a person's welfare and spiritual well-being lies in confessing his sins, crimes, offences and misdeeds. Indeed, the easiest way to conquer bad tendencies and habits is to confess one's deeds.'

(Translation from Bhakti Prakash, Katha Prakash pp. 528-530 Old edition, pp. 510-513 New edition) ■

माँ सब तेरे अर्पण है

प्रेम

(परम पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज का प्रवचन, श्री महाराज जी की डॉयरी से, 29.12.72)

प्रातः महाराज जी (श्री स्वामी जी) ने सबके लिए प्रार्थना की,''माँ हम तेरे दरबार में आने के योग्य नहीं।

''तेरे दर को छोड़ कर, किस दर जाऊँ मैं।
सुनता मेरी कौन है किसे सुनाऊँ मैं।''

''यह सब राम नाम आराधन तेरी कृपा से सम्पन्न हुआ है। यह सब तेरे अर्पण है। हम अबोध बालक हैं। कुछ त्रुटियाँ हुईं, हमको–क्षमा करना। तू कृपा करके माया का पर्दा उठा। हमारा उद्देश्य केवल,''वृद्धि आस्तिक भाव की.... ही रहा है। हम अपने आपको रिझाने के लिए तेरी आरती करते हैं। तेरी कृपा सब पर हो। नाम में प्रीति हो।''

सबसे गले मिल कर प्रसाद वितरण करके विदा ले ली।

इस बार महाराज जी ने

वन्देरामं सच्चिदानन्दम्,
अहं नमामि रामं–सत्यंशिवं मंगलं,
भज श्रीरामं भज श्रीरामं,
श्रीरामं भज विमलमते,
जय राम हरे, जय राम हरे
भव भय भंजन भगवान हरे।

पर खूब नृत्य किया–ऊँचे उछल–उछल कर। सब प्रेमियों ने महाराज जी को बीच में करके खूब नृत्य किया। मैंने 12 साल में महाराज जी के इस रुप को कभी नहीं देखा था। बड़ी मस्ती में आकर 'श्रीरामशरणं वयं प्रपन्नाः'' और प्रसीद देवेश जगत देवेश जगन्निवास'' की धुनें लगाईं। सब प्रेम विभोर हो गए। महाराज जी ने कहा चाहे सत्संग 3 रात्रि का है–फिर भी बहुत है–प्रसाद थोड़ा ही हुआ करता है। ■

अनुताप अश्रु

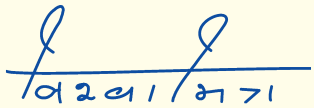

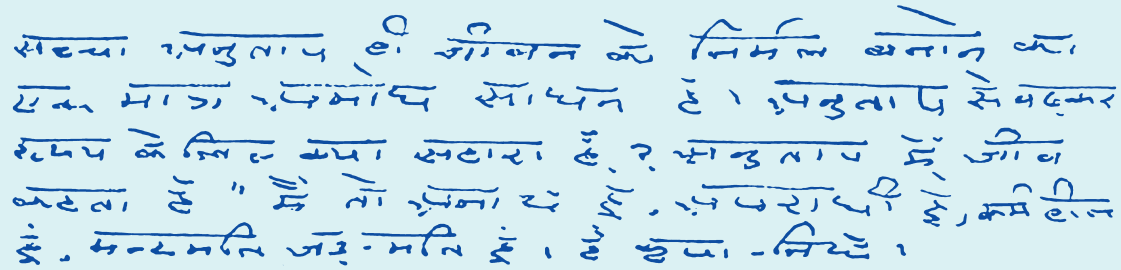

"True repentance is the only unfailing means to purify life, what is a greater solace for the heart than repentance? In repentance the soul says, "I am an orphan, an offender, devoid of virtuous actions, a dim-witted moron, O Treasure-house of Mercy!"

पूज्यपाद स्वामी जी महाराज ने आज अनुताप अश्रु का प्रसंग लिया है। अनुताप का अर्थ होता है पश्चाताप, पश्चाताप के आँसुओं का ये प्रसंग आज स्वामी जी महाराज ने शुरू किया है। कर्म सिद्धांत कहता है कि जिस प्रकार एक हजार से भी ऊपर गायों में, बछड़ा अपनी माँ को तत्काल ढूँढ लेता है, उसी के पास जाता है। विशेषतः गाय का बछड़ा, सम्भवतया भैंस के बछड़े में ऐसी योग्यता नहीं है। गाय का बछड़ा कहीं भी हो, हजारों गायों में से अपनी माँ के पास ही जाएगा। जिस प्रकार ये सत्य है, ठीक इसी प्रकार से यह भी सत्य है आप कहीं भी चले जाओ जब तक कर्म अपने कर्त्ता को पकड़ के अपने किए का फल उससे भुगतवा नहीं लेता वह उसका पीछा नहीं छोड़ता। कहीं भी चले जाओ आप, कर्म आपके पीछे जाएगा, आप को ढूँढ लेगा। कर्त्ता जिसने कर्म किया है।

यह कहना कि हम अमुक व्यक्ति के कारण दुःखी हैं, हमें अमुक व्यक्ति ने बहुत दुःख दिया है, गलत है। जब से घर में बहु आयी है चैन नहीं। बहु कहती है जब से सास से पाला पड़ा है मेरा चैन खत्म हो गया है। ये शब्द साधकों के शब्द नहीं हैं, ये शब्द सत्य को जानने वाले, पहचानने वालों के शब्द नहीं हैं– इस बात को स्मरण रखियेगा सदा याद रखियेगा। अपने कर्मों के अतिरिक्त न ही कोई किसी को दुःख देने वाला है और न ही किसी को कोई सुख देने वाला है। पुत्र नालायक निकलता है तो अपने कर्मों का फल, पति नालायक निकलता है तो अपने कर्मों का फल, सास अच्छी नहीं मिलती तो अपने कर्मों का फल, बहु यदि कोई लड़ाकी आ गई है तो अपने कर्मों का फल, इसके अतिरिक्त दूसरा और कोई कारण नहीं है –ऐसा शास्त्र कहता है एवं कर्म सिद्धांत भी इस बात को स्पष्ट करता है। इसलिए सदा आप जी से अर्ज़ की जाती है कि यहाँ हर कोई अपने कर्मों का ऋण उतारने के लिये आया हुआ है। समझदारी इसी में है कि अपने कर्मों का ऋण उतारते जाइएगा, चाहे वह किसी भी प्रकार का है। आपने चाहे धन के माध्यम से उतारना है, चाहे लड़ाई झगड़े, कलह क्लेश के माध्यम से उतारना है। चाहे किसी भी ढंग से, दब कर, अपयश से, किसी भी प्रकार का ऋण जो है, है तो कर्मों का ऋण, उस ऋण को उतारते जाइएगा।

बैंक कर्मचारी इस बात को बड़ी आसानी से समझ सकते हैं, क्योंकि ऋण लेते–देते हैं वह। हम यहाँ अपने कर्मों का ऋण उतारने के लिए आए हुए हैं। समझदार साधक साधना के बल पर, साधना करने के उपरान्त इस बात को समझ जाता है कि मुझे और ऋण नहीं लेना है। नहीं तो सामान्य व्यक्ति तो–पुराना उतारता रहेगा, कौन जानता है नया सिर पर चढ़ता जाता है या पुराना उतारते–उतारते भी वह नया और ले लेता है तो वह फिर ऋणी हो जाता है। मानो, अगले जन्म की तैयारी फिर हो रही है। एक साधक हो न, साधना करी है, नाम जपा है, आपको ये स्पष्ट होना चाहिए कि हम अपना पुराना ऋण उतारने के लिए आए हैं हमें नया ऋण अपने सिर पर नहीं चढ़ाना। नया ऋण लेकर फिर ऋणी हो कर फिर जन्म नहीं लेना।

आप सब बहुत अच्छी तरह से जानते हो शुभ कर्म का फल सुख है, कोई इसमें दूसरी राय नहीं, अशुभ कर्म का फल दुःख है इसमें भी कोई दूसरी राय नहीं। इस सिद्धांत को विधाता भी नहीं टाल सकता, यही सोच के आदमी समझता है कि कर्म बहुत बड़ा है। देखो न, कर्म या कर्मफल आपका पीछा नहीं छोड़ता। कितना बलवान है, आप कहाँ छिपकर चले जाओगे? यहाँ से विदेश चले जाओ, लंका चले जाओ, काले पानी चले जाओ, गोरे पानी चले जाओ, क्या कर्म आपका पीछा कहीं छोड़ेगा? कभी नहीं, कहीं नहीं, आपको पकड़ के रहेगा। जब तक आप से फल भुगतवा नहीं लेता तब तक आपका पीछा कर्म नहीं छोड़ने वाला। कर्म कितना बलवान है फल उससे भी ज्यादा। वास्तव में कर्म नहीं, फल आपका पीछा कर रहा है, भुगतान भुगतो। कड़वा है तो कड़वा खाओ, मीठा है तो मीठा, कसैला है तो कसैला, खट्टा है तो खट्टा खाओ जैसा भी फल है आप ही को खाना पड़ेगा, मैं आपको ही ढूँढ रहा था। कहाँ छुपे बैठे हुए हो आप! कहाँ छिप जाओगे आप! ये फल आपका पौधा लगाया हुआ है आपका बीज बोया हुआ है, आपका पेड़ है, आपके फल हैं और आपको ही खाने पड़ेंगे, जितने भी हैं। बोया तो एक था, देखो न बीज बोते हो आप एक। आम की गुठली ले लीजिएगा, simple सी उदाहरण आप सब समझते हो, एक आम की गुठली आप बोते हो तो विशाल आम का पेड़ खड़ा हो जाता है। उस पर एक आम नहीं लगता उस पर अनेक आम लगते हैं। यदि परमात्मा के घर में भी यही सत्य है एक पाप के फल से अनेक फल हो जाते हैं तो मेरे परमात्मा

तेरे अतिरिक्त हमें कोई बचाने वाला नहीं है। हमें पता नहीं, परमात्मा के घर में क्या होता है लेकिन जो शास्त्र कहता है, जो समझ में आती है बात, वह आप जी की सेवा में रखी जा रही है।

आम की गुठली ले लीजिएगा, simple सी उदाहरण आप सब समझते हो, एक आम की गुठली आप बोते हो तो विशाल आम का पेड़ खड़ा हो जाता है। उस पर एक आम नहीं लगता उस पर अनेक आम लगते हैं। यदि परमात्मा के घर में भी यही सत्य है एक पाप के फल से अनेक फल हो जाते हैं तो मेरे परमात्मा तेरे अतिरिक्त हमें कोई बचाने वाला नहीं है।

कर्म बलवान है, कर्मफल उससे भी बलवान है, फल देने वाला सबसे बलवान है। लेकिन फल देने वाला क्या करे, फल देने वाला ये भी कहता है कर्म और कर्मफल मेरे से बलवान हैं। मैं शुभ कर्म का फल अशुभ नहीं दे सकता तो फल या कर्म हुआ मेरे से बलवान। किसी ने पाप कर्म किया हुआ है तो उसका फल उसे सुख नहीं दे सकता तो मानो विधाता भी ये समझता है, विधाता भी ये घोषणा करता है कि ये चीजें मेरे से भी बड़ी हैं। संत महात्मा बार–बार आपजी से प्रार्थना करते हैं, हम सब से निवेदन करते हैं, अरे ओ बन्दे! तुझे भगवान से डरने की जरूरत नहीं, न तुझे शैतान से डरने की जरूरत है, डरना है तो अपनी करनी से, अपने कर्म से डर। यही वक्त है जब कुछ हो सकता है। जब हो गया तो फिर कुछ नहीं हो सकता।

आज स्वामी जी महाराज उन्हीं किए कुकर्मों पर पश्चाताप के आँसू बहाए जा रहे हैं। उन्होंने कुछ किए होंगे, नहीं किए होंगे वे जानें, परमात्मा जानें। पर स्वामी जी महाराज! हमने तो अनन्त किए हैं, कोई शक नहीं, ठोक बजा के कहते हैं। इसलिए पश्चाताप के आँसू बहाना एक साधक का काम है, हर एक को पश्चाताप नहीं होता। आज स्वामी जी महाराज इस पश्चाताप के आँसू बहाने की प्रक्रिया का वर्णन कर रहे हैं क्या है वह? वह ये है, सामान्य व्यक्ति–मैं आपकी बात नहीं कर रहा आप तो साधक हो। सामान्य व्यक्ति पाप करता जाता है, करता जाता है अभी तक वह अघाया नहीं है, थका नहीं है। उसे पता ही नहीं लगता कि पाप हो रहे हैं – स्वभाव हो गया हुआ है पाप करना और पापरत्त रहता है। जिंदगी खत्म होने को आ रही है लेकिन उसे बोध ही नहीं है। हम भाग्यवान हैं कि हमें अपने किए का बोध होता है कि आज हम से पाप हो गया, आज हमसे गलती हो गई। जब ये पता लग गया तो इसके बाद अगला step क्या है? उसे भूल जाते हैं तो आप भूल गए हो, परन्तु न कर्म भूला है न फल भूला है। वह आपका पीछा नहीं छोड़ेगा। यदि आपको अपना कर्म, अपना किया हुआ कुकर्म, अपना किया हुआ पाप याद है– जो साधक को याद होना ही चाहिए तो फिर उसके अन्दर साधना उस पाप को स्वीकार करने की हिम्मत देती है। ये कोई छोटी बात नहीं है, अपनी गलती को स्वीकार करना।

दो रास्ते यहाँ से शुरू होते हैं किसी संत को ढूँढिए उसके सामने जाकर, गुरु महाराज के सामने जाकर, अपने पाप को स्वीकार कीजिएगा पश्चातापपूर्वक। मात्र अश्रु का प्रसंग नहीं है, अनुताप अश्रु, पश्चाताप के अश्रुओं का प्रसंग है। पश्चातापपूर्वक संत से बात कीजिए, परमात्मा से बात कीजिए। परमात्मा से बात करना आसान है। उसके सामने अपना पाप स्वीकार करना, कबूल करना बहुत आसान है क्योंकि वह दिखाई नहीं देता। संत के सामने, गुरु के सामने या किसी अन्य के सामने अपना पाप स्वीकारने के लिए बहुत बड़ा बल चाहिए, बहुत बड़ी साधना चाहिए–जो ये कर जाता

है, स्वामी जी महाराज के अपने ही शब्द हैं, ''आलोचना करना बिल्कुल इसी प्रकार से है, जैसे एक बंद कमरे में आप झाड़ू बुहार लगाते हो, रोज़ के रोज़ उसकी सफाई कर देते हो, गन्दगी वहाँ जमा नहीं होती।'' ठीक इसी प्रकार से यदि आप अपने पाप कर्मों की आलोचना पश्चातापपूर्वक गुरुजनों के सामने, संत के सामने जा कर ये स्वीकार कर लेते हो, बयान कर देते हो, तो स्वामी जी महाराज फरमाते हैं कि पाप धुल जाता है, खत्म हो जाता है, साफ हो जाता है।

एक बात स्वामी जी महाराज साथ ही साथ और कहते हैं जो बहुत महत्वपूर्ण बात है। माताओ! आप बहुत अच्छी तरह से जानती हो। किसी कमरे में आप बुहारी लगाती हैं, झाड़ू लगातीं हैं बेशक बैठ के लगायें, झुक के लगायें, खड़े होकर लगाएं, उसके बावजूद भी कुछ न कुछ गन्दगी, कहीं न कहीं किसी कोने में रह जाती है। बार–बार तो झाड़ू नहीं लगाया जाता, एक ही बार आप अच्छी तरह से झाड़ू लगाती हैं तो आपको पता लग जाता है कि अब कमरा साफ हो गया है लेकिन इसके बावजूद भी थोड़ी देर के बाद दुबारा झाड़ू लगाती हैं तो फिर गन्दगी निकलती है, मानो अभी गंदगी पहली बुहारी लगाने से खत्म नहीं हुई थी, गन्दगी अभी भी बाकी है, तो ऐसे में आप क्या करते हो ? या तो उस कमरे की धुलाई कर देते हो, पोचा लगाते हो, उसे सुखाते हो, तब आप निश्चिंत हो जाते हो अब पूरी सफाई हो गई है।

ये दूसरा भाग क्या है? पहला भाग तो स्वामी जी महाराज ने समझा दिया कि आप आलोचना रूपी बुहारी झाड़ू लगाओ तो गन्दगी साफ हो जाती है, कूड़ा–कर्कट साफ हो जाता है लेकिन खत्म नहीं होता। स्वामी जी महाराज ने 'कथा प्रकाश' के अन्तर्गत आलोचना के बाद, अगला प्रसंग प्रायश्चित्त का लिया है। आपने गुरु महाराज के सामने, संत के सामने अपना किया हुआ पाप रो कर मानो, इस पाप होने पर मुझे दुःख है, रोना अर्थात् आप पश्चाताप कर रहे हैं। You are repenting, रोकर कि मेरे से ये बहुत बड़ी भूल हो गई है। स्वामी जी! मेरे से फिर भूल हो गई है। फिर माफ करवाइए, फिर साफ करवाइए, धुलवाइए। फिर भूल हो गई, फिर गए स्वामी जी महाराज के पास, स्वामी जी महाराज फिर भूल हो गई है मानो गलती करना, ये पाप करना, मेरा स्वभाव बन गया हुआ है, मैं पाप किए बिना रह नहीं सकता। इस प्रकार से संत के सामने मात्र इतना कहने से ही, संत का हृदय इस प्रकार से उछलता है, इस प्रकार से द्रवित होता है कि वह आप के अन्दर झाड़ू बुहारी लगा देता है, लेकिन पाप नष्ट नहीं होता। धुल जाता है, साफ हो जाता है लेकिन नष्ट नहीं होता। साधक इस बात को बहुत अच्छी तरह से जानता है। मात्र झाड़ू लगवाने से मेरा पाप नष्ट नहीं हो जाएगा। नष्ट तो होता है, जब पाप अपना भुगतान भुगतवा लेता है तो कर्म नष्ट हो जाता है अन्यथा नहीं। संत के सामने आपने इस प्रकार से confess किया confess करने के बाद, पश्चाताप, रोए आप तो संत ने झाड़ू लगा दिया।

लेकिन साधक जानता है कि इसके बाद आगे कुछ और करने की भी आवश्यकता है इसलिए हाथ जोड़ के पूछता है कि महाराज ये पूर्णतया खत्म हो जाए, नष्ट हो जाए, लेश भी बाकी न रहे इसका मुझे क्या प्रायश्चित करना होगा? संत प्रसन्न होता है, गुरु प्रसन्न होता है, पीठ पर हाथ रखता है तो गुरु उसे प्रायश्चित बताता है कि ये इतने दिन के लिए कर तो तेरा पाप नष्ट हो जाएगा। ये संत के अतिरिक्त, गुरु के अतिरिक्त कोई नहीं बता सकता। अपने आप अनुष्ठान लेने से भी लाभ होता होगा पर सम्भवतया पूर्ण लाभ तभी होता है जब संत के मुख से ये बात निकलती है कि इतना–इतना हिसाब–किताब अपना चुकता कर। इस प्रकार

से प्रायश्चित कर, इतने दिन का अनुष्ठान ले, इतने दिन के लिए ये कर, इतने दिन उपवास रख– इसको प्रायश्चित कहा जाता है। पाप का प्रायश्चित, इतना जाप अधिक कर। यदि आप बीस हजार रोज़ का जाप करते हो तो संत कहता है तीस हजार रोज़ का चालीस दिन के लिए कर तो तेरा पाप जो है वह उन्मूल हो जाएगा completely eradicate, हो जाएगा, नष्ट हो जाएगा ।

आलोचना के बाद, पश्चाताप के बाद, ये step यदि कोई भी चाहता है कि वह पाप completely eradicate हो जाए, खत्म हो जाए उसकी सजा मुझे आगे जा कर न भुगतनी पड़े तो उसका एक ही साधन है, गुरु महाराज से पूछिएगा कि इसका प्रायश्चित क्या है। अन्यथा बहुत बार आप देखते हो हमारे जीवन में ये बातें देखने को मिलती हैं, गलत खाया गया, आज रात कुछ गलत खाया गया, रात बेचैन गुजरेगी सुबह उठते ही उल्टी होगी, दस्त लग जाएँगे, ये ऐसा कर्म जो तत्काल फल देने वाला है। कुछ ही घंटों में फल शुरू हो जाता है, आप कोई कसैली चीज खाते हैं वह body उसको retain नहीं करती, accept नहीं करती थोड़ी देर के बाद ही आपको vomiting जो है वह शुरू हो जाती है, कर्म जो तत्काल फल देते हैं। कुछ ऐसे हैं – कुछ दिनों के बाद देते हैं, कुछ महीनों के बाद देते हैं तो कुछ–कुछ वर्षों के बाद देते हैं और ऐसे भी हैं जो इस जन्म में न देकर तो अगले जन्म में देते हैं। हरेक चीज़ का हिसाब–किताब है। आप जितने पढ़े लिखे भी हों परमात्मा से हमेशा ही कम पढ़े लिखे हैं। वह अपनी भेद की बातें हर एक के सामने तो खोलता नहीं है। Why waste time सोचता है, बता कर क्या करूँगा, इनको कोई आवश्यकता नहीं।

याद रखो, लगता है किसी कर्म का फल आज भोग लिया यदि वह फल या यूँ कहिएगा जैसे उदाहरण के तौर पर किसी ने आज कोई घृणित पाप कर दिया है पुलिस ने उसे पकड़ लिया है। पकड़ के कुछ बीच में बातचीत हुई जज साहब ने उसे तीन महीने की या छः महीने की सजा सुना दी। जज भी निश्चिंत है पाप किया था सजा दी। अपराधी भी निश्चिंत हो गया है जो पाप हुआ था उसकी सजा मिल गई। परमात्मा जानता है पूरी मिली है कि नहीं मिली। ये भेद, उसके सिवा कोई नहीं जानता। आपको ऐसा लगता है, बेशक जेल में जाकर अपने अपराध का, पाप का फल भुगत लिया है लेकिन यदि परमात्मा सोचता है कि inadequate है, यह पूरा नहीं है तो अभी भी वहाँ जाकर उस के घर में जाकर शेष भुगतना पड़ेगा। मैं क्यों आपजी से अर्ज़ करना चाह रहा था सिर्फ इसलिए, ये आपजी को बताने के लिये कि कर्म कितना बलवान है, इसे करते हुए ही सोचने कि आवश्यकता है। यही समय है, जिस वक्त सब कुछ किया जा सकता है, जब हो गया तो फिर कुछ नहीं किया जा सकेगा। भुगतना ही पड़ेगा।

अति शुभकामनाएँ, मंगल कामनाएँ परमेश्वर की कृपा सदा–सदा–सदा बनी रहे। सदबुद्धि दे, परमात्मा! सम्मति दे। पैसा न माँगो, नश्वर चीजें न माँगो, अनमोल चीजें माँगो जो परमात्मा के दरबार से ही मिलती हैं –सदबुद्धि माँगो सदबुद्धि देगा तो साथ ही साथ सन्मार्ग भी देगा और सन्मार्ग देगा तो सत्कर्म की प्रेरणा भी साथ ही साथ देगा। यही है करने की चीज़। मैं समझता हूँ यही साधना है। राम– राम का जप जो आप करते हैं, जो हम करते हैं मात्र इस चीज की प्राप्ति के लिए करते हैं ताकि हमारी बुद्धि ठीक हो, हम सन्मार्ग पर चलें ताकि हम जीवन भर सत्कर्म कर सकें।

(परम पूजनीय श्री महाराज जी का 16.7.2007 का प्रवचन) ■

श्रीरामशरणम् - एक ऐतिहासिक विवरण : पाँवटा साहिब

(श्रीरामशरणम् एक ऐतिहासिक विवरण के अन्तर्गत लेखों की अगली कड़ी)

कई वर्षों से एक वरिष्ठ साधक के घर में हर रविवार सत्संग का आयोजन होता था। सब साधकों की हार्दिक इच्छा थी कि श्री महाराज पाँवटा साहिब आएँ। 1994 में पहली बार परम पूज्य श्री विश्वामित्र जी महाराज पाँवटा साहिब पधारे। शिव मंदिर धर्मशाला में श्री अमृतवाणी संकीर्तन के पश्चात् नाम दीक्षा का कार्यक्रम हुआ।

1996 और 1997 जुलाई माह में दो साधना सत्संग पूज्य महाराज जी द्वारा 'बीबी जीत कौर स्कूल' में लगाए गए। पूज्य महाराज जी के निर्देशानुसार 23.4.1999 को श्रीरामशरणम् सोसाइटी पाँवटा साहिब का रजिस्ट्रेशन करवाया गया।

दिनांक 17.2.2002 को श्रीरामशरणम् पाँवटा साहिब का शिलान्यास परम पूज्य विश्वामित्र महाराज जी के आशीर्वाद से किया गया। भवन के निर्माण कार्य का संचालन परम पूज्य श्री महाराज जी के मार्गदर्शन में लगभग वर्ष भर चलता रहा। इसमें एक बड़ा सत्संग हॉल, जाप का कक्ष एवं परम पूज्य डॉ विश्वामित्र जी महाराज का कक्ष बनाया गया। हॉल के मुख्य द्वार पर 'श्रीरामशरणम गच्छामि' एवं श्री अधिष्ठान जी के ऊपरी स्थान पर 'श्रीरामशरणम् वयं प्रपन्नाः' भी अंकित किया गया। सत्संग हॉल में श्री अधिष्ठान जी की स्थापना की गई व उनके दाईं ओर परम पूज्य श्री स्वामी सत्यानंद जी महाराज तथा बाईं ओर परम पूज्य श्री प्रेम जी महाराज के चित्रों की भी स्थापना की गई।

दिनांक 6.4.2003 को परम पूज्य श्री महाराज जी के पावन सान्निध्य में हवन–पूजन का आयोजन किया गया, जिसका समापन पूरे शास्त्रों एवं आध्यात्मिक विधि द्वारा हुआ। नारियल समर्पण व द्वार पूजन के पश्चात् परम पूजनीय श्री महाराज जी एवं कलशधारी साधिका के द्वार प्रवेश के साथ श्रीरामशरणम् का उदघाटन हुआ। भारी संख्या में संगत पधारी थी।

अमृतवाणी संकीर्तन, भजन कीर्तन के पश्चात् परम पूजनीय श्री महाराज श्री के प्रवचनों द्वारा सब लाभांवित हुए और विशेष भवन उदघाटित हुआ और साधकों को अर्पित किया गया। परम पूजनीय श्री महाराज ने मान मर्यादाओं नियमों का पालन करने का निर्देश भी दिया। यह सारा कार्यक्रम लगभग 12 बजे तक चलता रहा। समापन पर प्रसाद एवं प्रीतिभोज का भी आयोजन किया गया, जिस में सभी उपस्थित साधकों ने बड़े ही भाव–चाव से भाग लिया। इस अवसर पर नाम दीक्षा भी हुई।

श्रीरामशरणम् पाँवटा साहिब माँ यमुना नदी के किनारे बना हुआ है, जब श्री महाराज जी श्रीरामशरणम् पहली बार आए, तो श्रीरामशरणम् जाने के लिए रास्ता कच्चा था और रास्ते के दोनों ओर पेड लगे हुए थे, परम पूजनीय श्री महाराज जी को बहुत ही अच्छा लगा। शाम के समय महाराज श्री, श्रीरामशरणम् की छत पर गए और उन्होंने वहां पर बैठकर माँ यमुना जी से आग्रह किया, कि हे यमुना माता! श्रीरामशरणम् पाँवटा साहिब आपके आंचल में बना है इस पर अपना आशीर्वाद बनाये रखना, तभी से इस जगह का नाम यमुना आंचल कॉलोनी रख दिया गया था।

जब श्री महाराज जी 2009 में पाँवटा साहिब पधारे तो उन्होंने यह धुन लगाई ''तू राम राम बोल बन्दिया बड़ा सुख पावेंगा''। श्री अमृतवाणी संकीर्तन के बाद उन्होंने कहा, ''अमृतवाणी संकीर्तन मिल कर करने से बड़ा लाभ है बड़ी बरकत है। जहाँ मतभेद आ जाते हैं बुद्धि भेद आ जाते हैं, छोटे बड़े का प्रश्न, अमीर गरीब का प्रदर्शन, मैं superior, ये inferior, मैं उच्च जाति का, ये नीची जाति का – जहाँ ये प्रश्न आ जाते हैं, संत महात्मा कहते हैं वहाँ से दिव्यता उठ जाती है। सब कुछ रहेगा, पर दिव्यता नहीं रहेगी। परमात्मा का हाथ उठ जाता है, वहाँ पर परमात्मा विराजमान नहीं रहते। एक राम सब उस राम के पूत।''

''साधना करिएगा, साधक को किसी प्रकार की अशान्ति नहीं होगी। अपनी पहचान याद रखो तो फिर अशान्ति कभी भी अशान्त नहीं कर सकती। बहुत आन्नदित रहोगे, शान्त, शीतल रहोगे। सबके काम आने के योग्य रहोगे। राम–नाम ने दूसरों के काम आना नहीं सिखाया, दूसरों के काम आना नहीं बनाया तो समझ लेना अभी राम–नाम ने अपना रंग नहीं चढ़ाया।''

श्रीरामशरणम् में दैनिक सत्संग– सुबह 7 बजे से 8 बजे तक होता है और साप्ताहिक सत्संग– सुबह 8 बजे से 9:30 तक होता है।

प्रत्येक मंगलवार, पूर्णिमा, हर माह की 2 तारीख, 13 तारीख, 29 तारीख को सुबह 8 बजे से 10 बजे तक जाप होता है।

परमेश्वर की विशेष अनुकम्पा से उस दिन से आज तक श्रीरामशरणम् का भवन श्री राम नाम से गूंज रहा है। यहाँ सभी विशेष दिवसों पर पुष्पांजलि का आयोजन होता है और दैनिक एवं साप्ताहिक सत्संग निर्विघ्न चलते हैं। संगत परम पूजनीय गुरुजनों की इस भेंट के पूर्ण आभारी हैं जिनके संरक्षण एवं मार्गदर्शन में हमें यह दिव्य स्थान प्राप्त हुआ है। हम सब यही प्रार्थना करते हैं कि भविष्य में भी हमें उनका आशीर्वाद व मार्गदर्शन प्राप्त होता रहे। ■

विभिन्न केन्द्रों पर सम्पन्न कार्यक्रम

(दिसम्बर 2023 से मार्च 2024)

साधना सत्संग, खुले सत्संग एवं नाम दीक्षा का विवरण

- **सूरत**, गुजरात में 16 से 17 दिसंबर तक दो दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमे 163 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **भिवानी**, हरियाणा में 23 से 24 दिसम्बर तक दो दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 15 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **उज्जैन**, मध्यप्रदेश में 25 दिसम्बर को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के पश्चात् 214 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **इन्दौर**, मध्यप्रदेश 5 से 8 जनवरी तक साधना सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 178 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

- **बोलासा**, झाबुआ मध्यप्रदेश में 11 जनवरी को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के पश्चात् 2093 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **दाहोद**, गुजरात में 12 जनवरी को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के पश्चात् 1814 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **कुपड़ा**, बांसवाड़ा, राजस्थान में 13 जनवरी को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के पश्चात् 1525 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **झाबुआ**, मध्यप्रदेश में 14 से 16 जनवरी तक खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमे 5018 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **पुणे**, महाराष्ट्र में 20 जनवरी तक खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 50 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **श्रीरामशरणम् दिल्ली** में 21 जनवरी को 31 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **बानमोर**, मध्यप्रदेश में 22 जनवरी को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के पश्चात् 58 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **फरीदाबाद**, हरियाणा में 26 जनवरी को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के पश्चात् 75 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **रोपड़**, पंजाब में 28 जनवरी को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के पश्चात् 40 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **हाँसी**, हरियाणा में 2 से 5 फरवरी तक साधना सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 82 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **गुरुग्राम**, हरियाणा में 7 फरवरी को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के पश्चात् 31 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **पीलीबंगा**, राजस्थान में 10 से 11 फरवरी तक खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमे 68 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **बंगा**, पंजाब में 18 फरवरी को खुले सत्संग का आयोजन हुआ।
- **रोहतक**, हरियाणा में 18 फरवरी को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के पश्चात् 50 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **गुना**, मध्यप्रदेश में 23 फरवरी को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन व प्रवचन के पश्चात् 463 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ली।
- **सरदारशहर**, राजस्थान में 24 से 25 फरवरी तक खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 203 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **अमरपाटन**, मध्यप्रदेश में 29 फरवरी को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के पश्चात् नाम दीक्षा हुई।
- **बिलासपुर**, हिमाचल प्रदेश में 1 से 3 मार्च तक खुले सत्संग के पश्चात् नाम दीक्षा हुई।
- **फाजलपुर**, कपूरथला पंजाब में 9 से 10 मार्च तक खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसके पश्चात् नाम दीक्षा हुई।
- **जबलपुर**, मध्यप्रदेश में 12 मार्च को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के पश्चात् नाम दीक्षा हुई।
- **हरिद्वार** में परम पूजनीय डा. विश्वामित्र जी महाराज के जन्म दिवस के उपलक्ष्य में 13 से 16 मार्च तक साधना सत्संग का आयोजन होगा।
- **रतनगढ़**, राजस्थान में 16 से 17 मार्च तक खुला सत्संग होगा जिसमें 16 मार्च को नाम दीक्षा होगी।
- **श्रीरामशरणम् दिल्ली** में 23 से 25 मार्च तक होली खुले सत्संग का आयोजन होगा। 24 मार्च को नाम दीक्षा होगी।
- **हिसार**, हरियाणा में 30 से 31 मार्च तक खुले सत्संग का आयोजन होगा जिसमें 31 मार्च को नाम दीक्षा होगी।

निर्माणाधीन श्रीरामशरणम् की प्रगति

- **नागोद**, मध्यप्रदेश में श्रीरामशरणम् का निर्माण कार्य प्रगति पर है। ■

गुरु कृपा

राम–राम जपने का फल हर अनुभूति हमें नए नए अनुभव देती है और गुरुजन के प्रति विश्वास को और सुदृढ़ करती है। 16-17 साल पहले जून के महीने में मेरी एक दिन M.A. की परीक्षा थी, झमाझम बारिश हो रही थी और रास्ते सड़कों पर पानी भर गया था। examination सेंटर लगभग 25 km दूर था व रास्ता श्रीरामशरणम् से हो कर जाता था। Exam एक बजे था, पर पानी के कारण मुझे लाजपत नगर में ही एक बज गया था। किनारे से ही दरवाजे तक पहुँचकर श्री महाराज जी को याद किया कि अब आप ही कुछ करिए। मैं लगभग 2:30 बजे पहुँची। वहाँ मना कर दिया कि अब exam में नहीं बैठने दिया जाएगा। College की सीढ़ियों में बैठकर बारिश रुकने का wait कर रही थी व गुरुजनों को याद कर रही थी। तभी वहाँ के Suptt. Examiner आए और कारण पूछा। शायद हाथ में माला देख कर बोले कि 45 min रह गये है, अगर लिखना चाहो तो paper लिख सकती हो। पहले उन्होंने application लिखवाई व reason लिखवाया (बारिश का) उसमें सिर्फ 30 मिनट थे। 6 questions थे मैंने सिर्फ points ही लिखे। Extra time के लिए वह पहले ही मना कर चुके थे। मैंने 35 मिनट में सिर्फ 2 पेज में 6 questions के answers points में लिख कर application की photocopy लगा कर submit कर दिया। घर आते ही श्री महाराज जी को पत्र लिख कर बताया। उन्होंने Sunday मिलने के लिए बुलाया और बोला की दोबारा paper नहीं देना होगा, यही clear हो जाएगा। मेरे हर्ष की सीमा नहीं रही कि result में उसी paper में मेरे 135/150 marks आये। श्री महाराज जी भी बहुत खुश हुए और कहा,''यह तुम्हारे राम–राम जपने का फल है। सिर्फ दो पेज लिखने में इतने नंबर मिले, यह हमारे गुरुजनों व राम कृपा ही हो सकती है।'' ■

श्री महाराज जी का जादू

अक्तूबर 2022 से मेरे breast में 2 गाँठ हो गई थी। पर संकोचवश किसी डॉक्टर को नहीं दिखाया, पर जनवरी 2023 में वह इतनी बढ़ गई की हार कर डॉक्टर को दिखाना ही पड़ा। उन्होंने कहा कि inflamed breast cancer है surgery करवा लीजिए। घर में सब परेशान व दुखी, 4-5 डॉक्टरों ने भी यही कहा की जल्दी surgery करवा लीजिए। घर में ऐसा माहौल की सब अंतिम इच्छाएँ पूरी करने में लग गए। मुझे बिलकुल डर नहीं लग रहा था। एक govt डॉक्टर ने कहा कि CT scan करवाते हैं कि surgery के लिए details पता चल जाएंगी। इन सब में 20-25 दिन बीत गये। CT scan के लिए उन्होंने कहा की 1 घंटे 15 मिनिट का procedure होगा, आपको बिना हिले लेटना होगा। जरा सा भी हिली तो दोबारा करना होगा। पूरा 1.5 घंटे हाथ में माला थी जप चल रहा था, उस कमरे में अकेली थी पर पूरे समय ऐसा लगा कि श्री महाराज जी सामने कुर्सी पर बैठे हुए हँस रहे हैं। पहली बार इतने समय के लिए श्री महाराज जी के साथ–उनकी मुस्कुराहट बता रही थी कि सब ठीक होगा। उनकी हँसती हुई आँखें आश्वासन दे रही थीं कि अभी नहीं ले जाएंगे। कुछ समय और संसार को झेलो और वही हुआ। Report में कुछ भी नहीं आया। जिन जिन डॉक्टरों से consult किया था सभी हैरान कि ऐसा कैसे हो गया? समय के साथ साथ वह गाँठ भी अपने आप कम होती चली गई। मुझे मालूम है कि यह श्री महाराज जी ने ही जादू से सब ठीक कर दिया। ■

Eating Time

We all love to eat delicious food, food that satisfies our sense of sight, smell, touch, taste and sound. Food that warms our heart and fills our belly. Food that provides our body with necessary nutrients to keep us healthy. But is that all? You might be surprised to know that that's not the whole story.

Let's take a close look at what Swami Ji taught us through his verses in Bhakti Prakash (page 23). Food is a gift from God, and it is to be enjoyed with immense grace. God is so kind and generous that He looks after our every need, including food. So before eating food it is important to thank God for everything that has been offered to us on our plate and to remember God with immense love and gratitude in our heart. We should feel so grateful and blessed that we enjoy every grain on our plate with love and satisfaction and pray that this food gives us the right energy to perform helpful and kind actions in life for everyone.

So, food is nothing short of magic and full of God's grace. To understand this more, let us do a simple activity. For this you will need a raisin. Just a single raisin.

Raisin Activity

Once you have a raisin, sit in a relaxed posture and place the raisin on the palm of your hand. If you don't have raisin at home then use your power of imagination and image that you are holding this beautiful raisin in your hand (picture below). Did you know that this very raisin you are holding in your hand was a juicy fresh grape till a few days back. A beautiful vineyard (picture below) far far away grew uncountable bunches of grapes. And out of them, one is now in your hand. How amazing is that! And then the grape was dried in the sun for many days and through God's grace it turned into this magical raisin which now you are holding. It is full of God's sweetness and love, ready to nourish you. Think about that as you eat it and embrace all of God's love showered upon you.

Now think about it, we only spoke of 1 tiny raisin but the food on our plate at every meal is full of so many different herbs, spices, vegetables, pulses and grains which have all grown through God's love and the efforts of numerous people. So definitely before we eat, we must have a lot of gratitude in our hearts.

So from now on, before you eat, please take a minute to thank God for offering this nourishing food and blessing on your plate, and eat with gratitude.

Raisin

Grapes

Vineyard

Sadhna Satsang (April to September 2024)

Haridwar	19 to 24 April	Friday to Wednesday
Haridwar (Only Jhabua)	27 to 30 April	Saturday to Tuesday
Haridwar (Only Jhabua)	2 to 5 May	Thursday to Sunday
Haridwar	30 June to 3rd July	Sunday to Wednesday
Haridwar	16 to 21 July	Tuesday to Sunday
Haridwar	30 Sept to 3 October	Monday to Thursady

Naam Deeksha In Shree Ram Sharnam Delhi (April to September 2024)

April	14	Sunday	10.30 AM
April (at Pitampura Delhi)	14	Sunday	5.00 PM
May	19	Sunday	10.30 AM
July	21	Sunday	4.00 PM
August	18	Sunday	10.30 AM
September	22	Sunday	10.30 AM

Poornima (April to September 2024)

April	23	Tuesday
May	23	Thursday
June	22	Saturday
July	21	Sunday
August	19	Monday
September	18	Wednesday

Open Satsang (April to September 2024)

Bhareri	06-Apr	Saturday
Mandi	07-Apr	Sunday
Jhabua(Maun Sadhna)	8 to 17 April	Monday to Wednesday
Kandaghat	12-May	Sunday
Manali	14 to 16 June	Friday to Sunday
Delhi	27 to 29 July	Saturday to Monday
Rohtak	10 to 11 August	Saturday to Sunday
Hoshiarpur	08-Sep	Sunday
Rewari	14 to 15 Sept	Saturday to Sunday
Gurdaspur	27 to 29 Sept	Friday to Sunday

Naam Deeksha in Other Centers (April to September 2024)

Place	Date	Day
Bhareri	06 Apr	Saturday
Mandi	07 Apr	Sunday
Jawali	13 Apr	Saturday
Kandaghat	12 May	Sunday
Faridabad	25 May	Saturday
Chambi	26 May	Sunday
Jalandhar	02 Jun	Sunday
Chandigarh	09 Jun	Sunday
Manali	16 Jun	Sunday
Kishtwar	22 Jun	Saturday
Badherwah	23 Jun	Sunday
Hoshiarpur	08 Sep	Sunday
Gurdaspur	29 Sep	Sunday

यदि आप 'सत्य साहित्य' की इस प्रति को नहीं रखना चाहते,
तो कृपया इसे अपने स्थानीय केन्द्र या निकटतम श्रीरामशरणम् को लौटा दें।

प्रकाशक मुद्रक श्री अनिल दीवान द्वारा श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट, 8 ए रिंग रोड, लाजपत नगर–IV नई दिल्ली. 110024 से प्रकाशित एवं रेव स्कैनस प्राइवेट लिमिटेड, 216, सेक्टर-4, आई.एम.टी. मानेसर, गुरुग्राम, हरियाणा-122051 से मुद्रित। संपादकः मेधा मलिक कुदेसिया एवम् मालविका राय

Publisher and printer Shri Anil Dewan for Shree Swami Satyanand Dharmarth Trust, 8-A Ring Road, Lajpat Nagar IV, New Delhi 110024 and printed at Rave Scans Private Limited, 216, Sector-4, IMT Manesar, Gurugram, Haryana-122051. Editors: Medha Malik Kudaisya and Malvika Rai.

©श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट, नई दिल्ली

E-mail of Satya Sahitya: srs.satyasahitya@gmail.com
E-mail of Shree Ramsharnam: shreeramsharnam@hotmail.com
वेबसाईट: www.shreeramsharnam.org

RNI No. DELBIL/2017/72924